नरेश सक्सेना

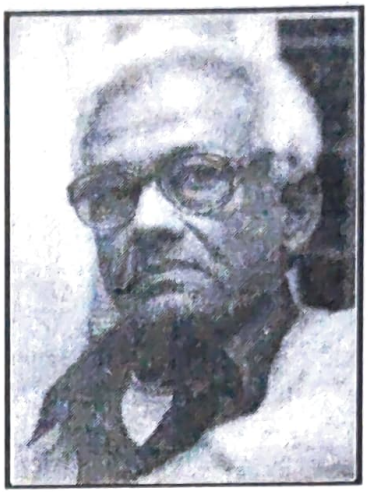

जन्म : 1939 ।

जन्म-स्थान : ग्वालियर, मध्य प्रदेश ।

शिक्षा : बी० ई० (ऑनर्स) जबलपुर ।
एम० ई०-पी० एच०, ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हाइजिन, कलकत्ता ।

वृत्ति : उत्तर प्रदेश जल निगम में उपप्रबंधक, टेक्नोलॉजी मिशन के कार्यकारी निदेशक, त्रिपोली (लीबिया) में वरिष्ठ सलाहकार, संप्रति सरकारी सेवा से निवृत्ति के बाद बुंदेलखंड ग्रामीण पेयजल एवं पर्यावरण उन्नयन योजना से संबद्ध ।

संपादन : साहित्यिक पत्रिका 'आरंभ', 'वर्ष' और उ० प्र० संगीत नाटक अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका 'छायानट' का सहसंपादन ।

गतिविधियाँ : टेलीविजन और रंगमंच के लिए हर क्षण विदा है, दसवीं दौड़, एक हती मनू (बुंदेली) का लेखन । एक नाटक 'आदमी का आ' देश की कई भाषाओं में पाँच हजार से ज्यादा बार प्रदर्शित । संबंध, जल से ज्योति, समाधान और नन्हे कदम आदि लघु फिल्मों का निर्देशन । अपनी पत्नी विजय नरेश द्वारा निर्देशित वृत्त फिल्मों जौनसार बावर और रसखान का आलेखन ।

सम्मान : 2006 में 'पहल सम्मान' । 1992 में निर्देशन के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार । 1973 में हिंदी साहित्य सम्मेलन का सम्मान ।

कविता संकलन : समुद्र पर हो रही है बारिश ।

नरेश सक्सेना बीसवीं शती के सातवें दशक में एक अच्छे और विश्वसनीय ही नहीं, महत्त्वपूर्ण कवि के रूप में सामने आए । पेशे से इंजीनियर नरेश सक्सेना ने नवगीत आंदोलन में भी अपनी ओर ध्यान आकृष्ट किया था, किंतु शीघ्र ही उन्होंने कहीं अधिक बौद्धिक, वैचारिक और कलात्मक समझ तथा संवेदना के साथ सामने आई कविताओं द्वारा, अपने बारे में प्रबुद्ध जनों को फिर से सोचने और राय बनाने के लिए एक तरह से विवश किया । नरेश सक्सेना कविता को लिखने-पढ़ने और जीने के प्रति जितने सजग और गंभीर रहे हैं, उनके प्रकाशन और संग्रह-संकलन को लेकर उतने ही उदासीन भी । यही कारण है कि उनके पास संख्या में प्रकाशित-अप्रकाशित बहुत कविताएँ हैं किंतु उनका संग्रह अब तक एक ही प्रकाशित हो सका है । जीवन ही नहीं, कविताओं में भी नरेश सक्सेना का दृष्टिकोण नितांत निर्वैयक्तिक और वस्तुपरक रहा है । ऐसा लगता है कि कविताओं को रचे या लिखे जाने भर तक ही कवि उनसे आत्मिक रूप से जुड़ा रहता है, एक बार

जब वे अंतिम रूप से लिख ली जाती हैं तब कवि फिर उनसे निरपेक्ष हो जाता है ।

समसामयिक जीवन की समस्याओं और संघर्षों से नरेश सक्सेना गहरा साक्षात्कार करते हैं और ऐसा करते हुए उनका दृष्टिकोण और संवेदना मानवीय होती है, उस अर्थ में राजनीतिक नहीं जो उनके समय में चलन में है । दृष्टिकोण और संवेदना की प्रगाढ़ मानवीयता के भीतर ही वे राजनीति, सामाजिकता तथा प्रतिबद्धता के अन्य अर्थपूर्ण रुझानों को पचाते हुए आगे बढ़ते हैं । इंजीनियरी की शिक्षा ने उनके कवि स्वभाव, रचनादृष्टि, वस्तुबोध और भाषा को और अधिक समृद्ध ही किया है । इस तरह विज्ञान और तकनीक के साथ ही विविध विषयक अपने ज्ञान को उन्होंने जिस कठोर संयम में ढाला है, वह उनके समकालीनों के बीच उन्हें विशेष पहचान देता है ।

प्रस्तुत कविता 'पृथ्वी' ऊपर कही गई बातों का ठोस साक्ष्य है । इस कविता में कवि ने 'पृथ्वी' और स्त्री को अक्स-बर-अक्स रखकर घर-परिवार की सुपरिचित भारतीय स्त्री के आत्म-संघर्ष, आत्मदान और त्याग को इतनी सरलता किंतु गहनता के साथ उकेरा है कि विस्मित रह जाना पड़ता है । कविता पढ़ने के बाद घर-घर में दिखाई पड़ती स्त्री एक अद्‌भुत गरिमा से परिपूर्ण प्रतीत होती है । यह कविता नरेश सक्सेना के कविता संकलन 'समुद्र पर हो रही है बारिश' से लीं गई है ।

◆ ◆ ◆

"जैसे चिड़ियों की उड़ान में
शामिल होते हैं पेड़
क्या कविताएँ होंगी मुसीबत में हमारे साथ ?

शिशु लोरी के शब्द नहीं
संगीत समझता है
अभी वह अर्थ समझता है
बाद में सीखेगा भाषा ।"

(समुद्र पर हो रही है बारिश)

—नरेश सक्सेना

पृथ्वी

पृथ्वी तुम घूमती हो
तो घूमती चली जाती हो
अपने केंद्र पर घूमने के साथ ही
एक और केंद्र के चारों ओर घूमते हुए लगातार

क्या तुम्हें चक्कर नहीं आते
अपने आधे हिस्से में अँधेरा
और आधे में उजाला लिए
रात को दिन और दिन को रात करते
कभी-कभी काँपती हो
तो लगता है नष्ट कर दोगी अपना सारा घरबार
अपनी गृहस्थी के पेड़ पर्वत शहर नदी गाँव टीले
सभी कुछ को नष्ट कर दोगी

पृथ्वी क्या तुम कोई स्त्री हो

तुम्हारी सतह पर कितना जल है
तुम्हारी सतह के नीचे भी जल ही है
लेकिन तुम्हारे गर्भ में
गर्भ के केंद्र में तो अग्नि है
सिर्फ अग्नि

पृथ्वी क्या तुम कोई स्त्री हो

कितने ताप कितने दबाव और कितनी आर्द्रता से
अपने कोयलों को हीरों में बदल देती हो
किन प्रक्रियाओं से गुजर कर
कितने चुपचाप

रत्नों से ज्यादा रत्नों के रहस्यों से
भरा है तुम्हारा हृदय

पृथ्वी क्या तुम कोई स्त्री हो

तुम घूमती हो
तो घूमती चली जाती हो ।

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि को पृथ्वी स्त्री की तरह क्यों लगती है ?
2. पृथ्वी के काँपने का क्या अभिप्राय है ?
3. पृथ्वी की सतह पर जल है और सतह के नीचे भी । लेकिन उसके गर्भ के केंद्र में अग्नि है । स्त्री के संदर्भ में इसका क्या आशय होगा ?
4. पृथ्वी कोयलों को हीरों में बदल देती है । क्या इसका कोई लक्ष्यार्थ है ? यदि हाँ तो स्पष्ट करें ।
5. 'रत्नों से ज्यादा रत्नों के रहस्यों से भरा है तुम्हारा हृदय'–कवि ने इस पंक्ति के द्वारा क्या कहना चाहा है ?
6. 'तुम घूमती हो तो घूमती चली जाती हो ।' यहाँ घूमना का क्या अर्थ है ?
7. क्या यह कविता पृथ्वी और स्त्री को अक्स-बर-अक्स रखकर देखने में सफल रही है । इस कविता का मूल्यांकन अपने शब्दों में करें ।

कविता के आस-पास

1. आपके विचार से क्या पृथ्वी और स्त्री में समानताएँ हैं ? कविता से अलग हटकर अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दें https://www.evidyarthi.in/
2. इस कविता में कुछ भौगोलिक और वैज्ञानिक तथ्यों की ओर संकेत हैं, वे क्या हैं ? उनकी चर्चा करें ।
3. पृथ्वी के भीतर जीवश्म ईंधन बनने की प्रक्रिया की चर्चा अपने विज्ञान शिक्षक से करें ।
4. अपनी कल्पना शक्ति से 'नदी' पर एक कविता लिखने का प्रयास करें ।
5. इस कविता में प्रयुक्त स्त्री के स्थान पर अपनी माँ को रखकर एक निबंध लिखें ।
6. कवि पेशे से इंजीनियर रहे, कविता पर इसका प्रभाव किस रूप में दिखाई पड़ता है ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –
   पृथ्वी, जल, अग्नि, स्त्री, दिन, हीरा
2. 'कभी-कभी काँपती हो' में 'कभी-कभी' में कौन-सा समास है ? ऐसे चार अन्य उदाहरण दें ।

3. इन शब्दों से विशेषण बनाएँ –
   स्त्री, पृथ्वी, केंद्र, पर्वत, शहर, सतह, अग्नि
4. इस कविता में पृथ्वी प्रस्तुत है और स्त्री अप्रस्तुत । आप प्रस्तुत और अप्रस्तुत के भेद स्पष्ट करते हुए इस कविता से अलग चार उदाहरण दें ।
5. 'पृथ्वी क्या तुम कोई स्त्री हो'–यह प्रश्नवाचक वाक्य है या संकेतवाचक । उदाहरण के साथ इन दोनों वाक्य प्रकारों का अंतर स्पष्ट करें ।
6. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें –
   पृथ्वी, स्त्री, केंद्र, गर्भ, जल, अँधेरा, उजाला, ताप, हृदय, प्रक्रिया, गृहस्थी, घरबार

शब्द निधि

आर्द्रता	:	नमी
गृहस्थी	:	गृह-व्यवस्था
सतह	:	ऊपरी तल